।। ब्रम्ह भक्त को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ब्रम्ह भक्त को अंग लिखंते ||

|| श्लोक ||

जत्तीस मत्तो किरिया बिचारी || बहु धाम परसे जिग सुध धारी ||
सेवास पूजा सुरगुणो स ध्यावे || बिन ब्रम्ह भगती || मोखोन जावे ||१||

कड्क जतीका मत धारण कर जतीकी क्रिया साधी,सभी अड्सट धाम किये,सभी यज्ञ कोई अशुध्दी न रखते किये,कष्ट दे देकर सुरगुण देवतावोकी सेवा पूजा और आराधना की तो भी जीव मोक्षमे नही जायेगा । मोक्षमे जीव सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ति करने पे ही जायेगा ।।।१।।

निगमो स बाणी बहु बिध बोले || के मुख अेसी तिहुँ लोक तोले ||
अरथांस गरथां वार न पारा || बिना ब्रम्ह भगती मोखो न द्वारा ||२||

सभी प्रकार के वेदो की बाणी कंठस्थ बोलता । तिन्हो लोक एकही साख मे तोले जायेगे ऐसी मुखसे बाणी बोलता । ग्रंथ और उन ग्रंथोका भेद पार नही आते इतना जान लिया रहता फिर भी जीव मोक्षमे नही जायेगा । मोक्ष के दरवाजे सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती के बिना नही जायेगा । ।।२।।

मत्तोस जत्तो भिन पंथ पीया || पवन ज खेंची गिर वास लीया ||
वासो ज रोजा मून संभावे || बिन ब्रम्ह भगती मोखो न जावे ||३||

मत और जत अलग अलग पंथके ज्ञान से धारण किया । श्वास को खिंचकर भृगुटी गिरवर मे चढाया । सभी वास,उपवास व रोजे किया । मौन धारण किया तो भी जीव मोक्षमे नही जायेगा । मोक्ष मे जीव सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ति करने पे ही जायेगा ।।।३।।

क्रोतो ज कासी झाँफो न कंवळा || अग्निन ठाढो उलटा न संवळा ||
नव लीस अंतो जळ पांख धोई || बिन ब्रम्ह भगती मोखो न होई ||४||

काशी मे जाकर करवत चलाता । झॉप लेता । महादेव को अपना सिर चढा देता । अग्नी मे खडा रहता,हिमालयमे गल जाता,उलटा लटकता,कड्क आसन मारकर बैठता,नौली क्रिया करता और आतडे जलसे धोता और पांखोसे पुछ्ता तो भी जीवका मोक्ष नही होगा । जीव का मोक्ष सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती करने पे ही होगा ।।।४।।

अन तज नीरो काया ज पाडे || शिव पास पूजा कंवळो ज चाडे ||
बनवास मेरे धुणि चहुँ फेरा || बिन ब्रम्ह भगती मोखो न डेरा ||५||

अन,पानी त्यागकर काया त्याग देगा । महादेव की पुजा कर महादेव के सामने अपना सर काटकर चढा देगा । बन मे जाकर रहेगा और चारो ओर से चौऱ्यासी प्रकार की धुनी लगाकर बिच मे बैठकर तपश्चर्या करेगा तो भी जीव का मोक्ष नही होगा । जीव का मोक्ष सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती करने पे ही होगा ।।।५।।

फळ फूल फराळ पै घ्रित सोडे || बहु बिध आसन काया जुं मोडे ||

सिर केस अंगा फिर खाख ल्यावे ।। बिन ब्रम्ह भक्ति मोखो न पावे ।।६।।

फल फुल का फराल करेगा,दूध और घी खायेगा बाकी सभी अनाज त्याग देगा और सभी आसन करके काया को मोडेगा । मस्तक,बाल और शरीर पे राख लगायेगा तो भी जीव मोक्ष मे नही जायेगा । मोक्ष मे जीव सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती करने पे ही जायेगा ।।।६।।

रिधोस सिधो बहुं पास होई ।। देह दिष्ट पलटी सब सिष्ट जोई ।।
भूतोस प्रेतो देवोस ल्यावे ।। बिन ब्रम्ह भक्ति मोखो न जावे ।।७।।

सभी रिध्दीयॉ और सिध्दियाँ पास में है । देह दिष्ट पसारते ही सब सृष्टी देख लेता और मंत्रो के बल से भूत,प्रेत और देवो को बुला लेता तो भी जीव मोक्ष मे नही जाता । मोक्ष मे जीव सतस्वरुप ब्रम्हभक्ती करने पे ही जायेगा ।।७।।

अेवास मेहरी सेजो स त्यागे ।। बहु खूब बैठक अेनिस जागे ।।
कर ग्रास आहारी आसान कोई ।। बिन ब्रम्ह भक्ति मोखो न होई ।।८।।

अपने महल का,पत्नीका और आरामदायी बिछौनेका त्याग करता और खिल्लेके आसन पर बैठता और सोता,खिल्ले ठोके हुये पाटेपर अच्छी बैठक मारता । रात-दिन जगा रहता कभी भी सोता नही और अपने हथेली पर जितना आ सकता उतना ही ग्रास लेकर आहार करता और इससे अधिक भोजन नही करता । किसी थाली या बर्तन मे न खाते हथेली पर ही भोजन करता तो भी जीव का मोक्ष नही होगा । जीव का मोक्ष सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती करने पे ही होगा ।।।८।।

लछो स गछो बहुं सरूप धारी ।। गुफास वासं गेहे पाँच मारी ।।
सुखोस दुखो से सोस जाणी ।। बिन ब्रम्ह भक्ति मोखो न प्राणी ।।९।।

अच्छे अच्छे लक्षण धारण करता,बहोत से रुप धारण करता । गुंफा मे जाकर रहता और पॉचो इंद्रियो को मारता । सुख और दु:ख सभी सहन करता । तो भी प्राणी का मोक्ष नही होता । प्राणी का मोक्ष सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती करने पे ही होगा ।।।९।।

देह तेल सिंचे अग्निज बाळे ।। सब तन कापी प्रान प्रजाळे ।।
बहु हट हुन्नर करिये स कोई ।। बिन ब्रम्ह भक्ति मोखो न होई ।।१०।।

शरीरके उपर तेल छिड्ककर अग्नी मे जलाता । अपना सारा शरीर काटकर प्राण त्यागता । बहोत प्रकार के हट और हुन्नर करता तो भी जीव का मोक्ष नही होगा । जीव का मोक्ष सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती करने पे ही होगा ।।।१०।।

गज बाज फोजां बहु राज होई ।। दिन भाण दिवता आड न कोई ।।
अेवास गिगनो वाँ जाय लागा ।। बिन ब्रम्ह भक्ति धकार जागा ।।११।।

पास मे बहोत से हाथीयो का दल है । बहोत से घोडे है । बहोतसी फौज पास मे है और सूर्य उदयसे अस्त एक ही समय होता वहाँ तक राज्य है । जैसे दिन मे सुर्य दिपायमान होता और उस सूर्य के आडे आकर कोई अटकाता नही उसी तरह से कोई आडे आकर

अटका नही सकता और गगन के समान उँचाई पे रहने का मकान है । ऐसा मकान रहने के लिये रहा तो भी सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती के बिना उस रहने की उँची जगह को,राज्य विस्तार को,फौज को,उन घोडो को,हाथियो इन सबको धिक्कार है ।।।११।।

मिण सेत माणक द्रबोस खाणी ।। तिहुँ लोक धुजे पलटे न बाणी ।।
ईसा सदेह जते जोस पाया ।। बिना ब्रम्ह भक्ति धकार भाया ।।१२।।

मणीयो के साथ माणिक समान बहोत से द्रव्यो की खाण है । तिन्हो लोक जिससे कॉपते है और उसके कहे हुये वचन कोई पलटाता भी नही । जो कहेगा उसीके अनुसार सभी लोग करेगे । कहे अनुसार करने के लिये कोई इन्कार नही करता ऐसी देह और तेज जिसे मिला है परंतु सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ति के बिना उसे धिक्कार है ।।।१२।।

कळ धेन चित्रो किम्योस पारा ।। देवोस दाणुं सब पेक हारा ।।
रिण जीत सूरा मुडता न कोई ।। बिन ब्रम्ह भक्ति धकार होई ।।१३।।

कल्पवृक्ष,कामधेनू,चिंतामणी,चित्रावली और तरह तरह की किमीया अपार है सभी देव और दानव सभी हार गये है ऐसा किसी से न पलटाते आनेवाला शूरवीर रणजीत है ऐसा भी यदि रहा तो भी सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ति के बिना उसे धिक्कार है ।।।१३।।

मायास काया अरबास संखो ।। बहु ख्वास पासं ढुळ सीस पंखो ।।
चित्त चेत चेरी चावेस होई ।। बिन ब्रम्ह भक्ति धकार सोई ।। १४ ।।

काया सुंदर,निरोगी व बलशाली है । माया अरबो संखो मे है । सेवा करनेवाले खवास बहोत है । सिर के उपर पंखा ढुलानेवाले अनेक है। चित मे चाहनेवाली दासीयॉ और स्त्रियॉ बहोत है । तो भी सतस्वरुप ब्रम्हभक्ति के बिना उसे धिक्कार है ।।।१४।।

रागे न पागे न्यावो न निरणा ।। हे गज अंबा प्रखेस फिरणा ।।
सुणिये स सीखे तत्त काळ लीया ।। बिन ब्रम्ह भक्ति धकार जीया ।।१५।।

सभी राग रागीनीयो मे प्रविण है,पैरो के निशाण पहचानने मे प्रविण है,न्याय से निर्णय करने मे प्रविण है,हाथी,घोडे के साथ देश परदेश(प्रखेस)घुमता है । श्लोक,पद सुनते ही तत्काल सिख लेता है । ऐसा रह तो भी सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती के बिना उसके जिवित रहने को धिक्कार है । ।।१५।।

सिधोस पीरो अवतार होई ।। जुग थिर देहि खिरता न कोई ।।
सब शिष्ट भांजी थापे स न्यारी ।। बिन ब्रम्ह भक्ति धकार सारी ।।१६।।

सिध्दाई प्रगट करानेवाला सिध्द हो गया,करामातसे पीर तथा अवतार बन गया । जगत मे अपनी देह अमर कर लेता है । पूर्ण सृष्टी को पल मे भांगकर जैसे के वैसे थाप देता है ऐसा पराक्रमी भी रहा तो भी सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती के बिना उसके पराक्रम को धिक्कार है ।।१६।।

आताळ पाताळ तिहुँ लोक सुजे ।। सुभ जाण उसभा बिद बेत बुझे ।।

दत्तोस करणी कुंभ्यो स काई ।। बिन ब्रम्ह भक्ति धिकार भाई ।।१७।।

आताल,पाताल से लेकर स्वर्गादिक तक तिनो लोक सुजते है । शुभ तथा अशुभ विधीयो मे जानकार होने के कारण सारे धन तथा अच्छी करणीयॉ की कोई कमी नही है तो भी सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती के बिना उसे धिक्कार है ।।।१७।।

आकार जप्यां बहुं बिध सेवा ।। धन सुत राजं तुष्टोस देवा ।।
सुर लोक वासा जुग च्यार दीया ।। फिर घेर गधी जढ जीव कीया ।।१८।।

आकारी देवी देवता अवतारो का जप व सेवा बहोत करता है तब वह देव प्रसन्न होकर धन,पुत्र तथा राज देता है और चार युग के त्रेचालीस लाख बीस हजार वर्षतक देवलोक मे रहने को निवास पाता है । फिर बाद मे उसे गधा या जड जीव बना देते है ।।।१८।।

रोजास बरतो वासोस धामा ।। गेहे प्राण रूपं उत्तमो स जामा ।।
तप तेज इंद्रि ग्रेहे त्याग कीया ।। सुरलोक भूलोक अेबास दीया ।।१९।।

रोजे रखता है,व्रत,उपवास करता है । सभी तिर्थ करता है और अगले जनम मे उत्तम रुपवान काया पाता है । घर ग्रहस्थी त्यागकर तप तेज से इंद्रिये मारता है । सुरलोक तथा चौदा भवन मे का भुवरलोक मे वास मिलता है ।।।१९।।

किरिया स करणी देवोस भाखे ।। गुफा ज जापे बैकुंट राखे ।।
सब सोझ करणी फळ रूप पावे ।। बिन ब्रम्ह भक्ति मोखो न जावे ।।२०।।

अच्छी क्रिया करणी करता है,देवो की आराधना करता है । गुंफा मे रहकर जप करता है और करणीयो के फलो के प्रमाण से बैकुंठ मिलता है तो भी जीव मोक्षमे नही जायेंगा मोक्षमे जीव सतस्वरुप ब्रम्हभक्ती करने पे ही जायेगा ।।।२०।।

ध्रबोस गेला गत्त गाय खेती ।। गोळीस तीरो तिल तत्त मेथी ।।
तुरणी स पासा बहु हीर होई ।। बिन भेद भक्ति मोखो न लोई ।।२१।।

द्रव्य,गेला( ),गत्त और गाय तथा खेती बहोत है । गोली तथा तीर चलाने मे प्रविण है । गोली तथा तीर से तिल तथा मेथी दाने सरीखी बारीक वस्तू उडा देता है । पास मे स्त्रियॉ और हिरे बहोत है परंतु सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती के भेद के बिना लोगो का मोक्ष नही होगा । ।।२१।।

सर नीर बंधो तर फूल दीया ।। बहु रूप गेली बिन जोतडीया ।।
मिष्टो न नवजे रेणो न चंदा ।। बिन भेद भक्ति सुखो न संदा ।।२२।।

सरोवर को बांध बांधता है और वृक्ष और फुलो की भरपूर फसल करता है ।।।२२।।

सुधो न बुधो सुच्चो न काया ।। बिन भेद बकता ।। बहु ग्यान लाया ।।
खर स्याल कवा स्वानो पुकारे ।। बिन भेद बक ग्यान यूँ झख मारे ।।२३।।

कोई सुध्दी नही कोई बुध्दी नही,काया विषयविकारो से अपवित्र है । कोई भेद नही और वह ब्रम्ह के नामपर ज्ञान ला लाकर बक रहा है और गधा रेंकनेपर सिंयार,कौऍ और कुत्ते

भौकते है,कोलाहर करते है इसप्रकार ब्रम्ह ज्ञान के नाम निच कर्म प्रकृती का झूठा ब्रम्हज्ञान बतलाकर लोगो को बहकाता है ।।।२३।।

देवो न नीरं मीदो न कूँपे ।। नहिं प्राण पिंडे तक्रोन चूंपे ।।
वा सन कण भव पो भूस केसे ।। बिन ब्रम्ह भक्ति गिनानो स अेसे ।।२४।।

देव भी नही और पानी भी नही,नदी भी नही और कुॅआ भी नही और पिंडो मे प्राण नही और तक्रो न चूंपो ( ) बासान कण भव पो भूस कैसे ( ) ब्रम्ह भक्ती के बिना सभी ज्ञान ऐसे ही है ।।।२४।।

हे रूज नगरो गेहे मांड दीया ।। ध्रबोज जागा अेहे नाण कीया ।।
यूँ भेव का स गुर सिष खोले ।। तब जोस आतम मुखराम बोले ।।२५।।

हे रुज( )शहर लेकर मांड(बना)दिया ऐसा ही भेद गुर शिष्य को खोलकर बताते है तब आत्मा को जोर आकर मुँख से रामनाम बोलने लगा ।।।२५।।

घाटा ज समदो गढ नींव काची ।। केहे राग भेदं गहे चीज आची ।।
यूँ जाण जोगी तब ब्रम्ह पावे ।। के सुख मोखो सो हंस जावे ।।२६।।

समुद्र का घाट और गढ की नीव,काच्ची और राग रागिनी का भेद बताता है और अच्छी चीज धर लेता है,योगी इस तरह से ऐसा जानेगा तब ब्रम्ह मिलेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि तब यह हंस मोक्ष मे जायेगा ।।।२६।।

खिम्या गिनानो जरणास नितो ।। मुख साच बोली सब लछ जीतो ।।
बैकुंट वासा सुख चेन पावे ।। बिन तत्त चीन्या मोखो न जावे ।।२७।।

क्षमा,ज्ञान,जरणा(सहनशीलता)नित्य रखता है । मुँख से सत्य बोलता है और सभी लक्षण जीत जाता है उसे वैकुंठ का वास मिलता है और वैकुंठ मे सुख तथा चैन पाता है परंतु तत्त (ब्रम्ह)पहचान पाता नही । तब मोक्ष मे नही जाता है ।।।२७।।

सब लछ जरणा किर खोज बारी ।। मथ गिनांन किमत रा भेद सारी ।।
कण नाम पावे अेहे रात ध्यावे ।। के सुख मोखो या बिध पावे ।।२८।।

सभी लक्षण और जरणा(सहनशीलता)और खेती बारी,अपना ज्ञान और अपने मत के रास्ते का भेद सब कण(सार)नाम मिलेगा फिर उस नाम का रात दिन सुमिरन करेगा तो इस तरह से मोक्ष मिलेगा ऐसा आदि सतगुर सुखरामजी महाराज बोले ।।।२८।।

।। इति ब्रम्ह भक्ति को अंग संपूरण ।।